अनातोली मित्यायेव



अंतरिक्षयात्री और ग्रीश्का

सौम्या सुरेश



अनातोली मित्यायेव

अंतरिक्षयात्री और ग्रीश्का

अनुवादक : मुनीश सक्सेना
चित्रकार : यूरी मेलेकानोव

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५



हमारी इस पृथ्वी के ग्रह पर एक देश था, और उस देश में एक नगर था, और उस नगर में एक छोटा-सा लड़का रहता था जिसका नाम था ग्रीश्का। वह बड़ा उपद्रवी था और उसे सबसे लड़ने का चाव था – सच तो यह कि वह पृथ्वी पर सबसे शरारती लड़का था। वह बड़ों की बात नहीं सुनता था और अपने से छोटे बच्चों को तंग करता था। इसीलिए सब लोग उसे ग्रेग या ग्रेगी न कहकर ग्रीश्का कहते थे।

एक दिन ग्रीश्का बाहर अहाते में निकला तो उसने देखा कि एक छोटी-सी लड़की मरीना अपनी तीन पहियोंवाली साइकिल चला रही है। ग्रीश्का ने उसे साइकिल पर से गिरा दिया, स्वयं उस पर बैठ गया, और रास्ते पर भरे हुए पानी में साइकिल दौड़ाने लगा। थोड़ी ही देर पहले बारिश हुई थी और सभी तरफ़ पानी ही पानी था। जिधर भी वह जाता पानी की फुहारें उड़ने लगतीं। उसे बड़ा मज़ा आ रहा था; वह गाने लगा:

ग्रीश्का का जहां पड़ेगा थप्पड़
उभरेगा वहीं बड़ा-सा गूमड़
उभरेगा वहीं बड़ा-सा गूमड़
ग्रीश्का का जहां पड़ेगा थप्पड़



इस तरह वह इधर से उधर साइकिल दौड़ाता रहा और अपना गाना गाता रहा जिसका न कोई सिर था न पैर; आखिरकार जब वह गाना गाते-गाते और साइकिल चलाते-चलाते थक गया तो उसने साइकिल वहीं पानी के एक गड्ढे के बीच में छोड़ दी। उसे क्या परवाह थी, उस शरारती लड़के को! उसने तो रबड़ के बूट पहन रखे थे! पानी के गड्ढे को पार करता हुआ वह सूखी जगह पहुंच गया, और वहां खड़े होकर इसकी राह देखने लगा कि मरीना साइकिल वापस ले जाने के लिए अपने जूते पहने हुए पानी में पांव रखे।

मरीना अपने जूते कीचड़ में गंदे नहीं करना चाहती थी, इसलिए पहले वह एक ईंट लायी, फिर एक छोटा-सा पटरा लायी, ताकि वह एक पुल बना सके। लेकिन जैसे ही मरीना का पुल बनकर तैयार हुआ ग्रीश्का ने साइकिल को लुढ़काकर पानी के दूसरे गड्ढे में पहुंचा दिया।

मरीना इतनी दुखी हुई कि वह फूट-फूटकर रोने लगी, लेकिन ग्रीश्का बस हंसता रहा। इतने में वान्या, जो पड़ोस के घर में रहता था, बाहर निकला। उसने ग्रीश्का का गरेबान पकड़कर कहा:

"अच्छा, ग्रीश्का, वह साइकिल अभी इसी क्षण यहां लेकर आओ, और यह न समझना कि तुम भागकर बच जाओगे। मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, और तब तुम्हारी अच्छी तरह पिटाई होगी।"

वान्या ग्रीश्का से लंबा नहीं था, और वह उससे बड़ा भी नहीं था, लेकिन ग्रीश्का डर गया और कोई चूं-चपड़ किये बिना पानी के गड्ढे में चला गया।

जब वह साइकिल मरीना के पास वापस ला रहा था उसी वक़्त पास-पड़ोस की सभी लड़कियां यह अनोखा दृश्य देखने के लिए जमा हो गयीं। सब मिलाकर बीस लड़कियां थीं। और उस शरारती लड़के को सज़ा मिलते देखकर वे बीस की बीस लड़कियां ख़ुश होकर हंसने लगीं। वे हंसीं ही नहीं बल्कि उन्होंने अपनी जीभ निकालकर और तरह तरह के मुंह बनाकर उसे चिढ़ाया भी।

ग्रीश्का इतना लज्जित हुआ कि वह भागकर अटारी में चला गया और बड़ी देर तक वहां बैठा मरीना का बचाव करनेवाले से बदला लेने की तरकीबें सोचता रहा।

"मैं उसे ऐसी टंगड़ी मारूंगा कि वह सीधा पानी के गड्ढे में जाकर गिरेगा और पानी उछलकर सतखंडे मकान की सबसे ऊपरवाली छत तक जायेगा!

"या मैं उसे लिफ़्ट में पकड़ लूंगा और कोई चीज़ ऐसे तोड़ दूंगा कि वह हफ़्ते-भर उसी में फंसा पड़ा रहेगा।

"या इससे भी अच्छा यह होगा कि पड़ोस में बड़ा-सा कुत्ता है, उससे मैं कहूंगा कि उसे ज़मीन पर पटक दे, जिस तरह सीमा पर लोग पकड़े जाते हैं, और अपने अगले पंजों से उसे वहीं नीचे दबोचे रहे..."

ग्रीश्का बदला लेने की जो भी नयी तरकीब सोचता वह पिछली तरकीब से अधिक भयानक होती। लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसे मान लेना पड़ा कि उसने अपने मन से जो ये सारी बड़ी-बड़ी बातें सोच ली थीं उन सबको वह कभी पूरा नहीं कर पायेगा। अगर वह पड़ोस के कुत्ते को लाख लालच दिलायेगा तब भी वह उसका कहना नहीं मानेगा। और अगर वह लिफ़्ट में कोई चीज़ तोड़ दे तो सबसे ज़्यादा तकलीफ़ उसें ख़ुद होगी क्योंकि वह सबसे ऊपरवाली मंज़िल पर रहता था। अलबत्ता, वह टंगड़ी मारकर वान्या को पानी के गड्ढे में गिराने की कोशिश कर सकता था, लेकिन इसमें भी ज़्यादा ख़तरा इस बात का था कि आख़िर में वह ख़ुद पानी में तैरता हुआ दिखायी दे। बेशक, उसका दुश्मन बहुत चालाक था। लेकिन अगर वह, ग्रीश्का, ज़्यादा बलवान हो जाये, तब बात दूसरी ही होगी! तब वह सचमुच कुछ कर सकेगा।



ग्रीश्का अंतरिक्षयात्री से मिलने गया

उसी शहर में, जिस सड़क पर ग्रीश्का का घर था उसी पर एक अंतरिक्षयात्री भी रहता था। सभी अंतरिक्षयात्रियों की तरह वह बहुत नेक था और जब भी कोई मदद या सलाह मांगता था, तो वह कभी मना नहीं करता था। शहर के बच्चे उसके पास उसकी कहानियां सुनने, या चाय और मिठाइयां खाने, या उसके साथ ब्लाक खेलने आ जाते थे। वह बच्चों को बिस्तर पर लेटते ही सो जाना भी सिखाता था। कुछ बच्चे बिस्तर पर उलटते-पलटते रहते हैं, पिनपिनाते रहते हैं, कहानी सुनने के लिए मचलते रहते हैं और उन्हें कभी नींद ही नहीं आती। लेकिन जब अंतरिक्ष-यान में अंतरिक्षयात्री को पृथ्वी से सो जाने का आदेश मिलता है तो वह फ़ौरन सो जाता है। और अंतरिक्षयात्री बच्चों को यही सिखाता था।

"वह अंतरिक्षयात्री कुछ भी कर सकता है," ग्रीश्का ने अटारी में बैठे-बैठे मन ही मन सोचा। "शायद वह मुझे बलवान भी बना सकता है। मैं सोचता हूं जाकर उससे मिल लूं।"

और इसलिए ग्रीश्का अंतरिक्षयात्री से मिलने गया। अंतरिक्षयात्री उसे अपने दफ़्तर में ले गया, उसे बैठने को कुर्सी दी, और उससे पूछा:

"कैसे आये, ग्रीश्का? शायद एक प्याली चाय पीना चाहते होगे? या मेरे सारे मेडल देखना और उन्हें छूना चाहते होगे? चाय अभी तैयार होगी; और मेरे मेडल मेज़ की दराज़ में रखे हैं। या शायद तुम कुछ और सोचकर आये हो?"

ग्रीश्का ने सारे मेडल देखे। उन्हें अपनी उंगली से छुआ और बेचैनी से इधर-उधर की हरकतें करता रहा।

"कुछ और भी काम था," ग्रीश्का ने दबे स्वर में बुदबुदाकर कहा। उसने अपना साहस बटोरा। "लोग कहते हैं कि आप सब कुछ कर सकते हैं। क्या यह सच है?"

"हां, यह सच है," अंतरिक्षयात्री ने जवाब दिया, जिसे सुनकर ग्रीश्का बहुत खुश हुआ।

"तो मुझे बलवान बना दीजिये!" उसने कहा। "मुझे इतना बलवान बना दीजिये कि... कि... कि समझ में नहीं आता क्या कहूं!"

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारी मदद करूंगा," अंतरिक्षयात्री ने हामी भरते हुए कहा। "लेकिन मुझे यह बताओ, तुम इतने बलवान बनना क्यों चाहते हो?"

इस प्रश्न से ग्रीश्का डर गया। लेकिन करता क्या? सच-सच बताना ही पड़ा।

"इसलिए कि मैं वान्या की पिटाई करना चाहता हूं। उसने सारी लड़कियों के सामने मुझे बुद्धू बनाया। वे हंसती रहीं और तरह-तरह के मुंह बनाकर मुझे चिढ़ाती रहीं।"



"मैं समझ गया तुम्हारी बात," अंतरिक्षयात्री ने उदास होकर कहा। "अब मेरी समझ में आया... बात यह है, मुझे हर दम लड़नेवाले लड़के अच्छे नहीं लगते। लेकिन मैं अपनी बात का पक्का हूं। मैंने तुम्हें बलवान बना देने का वादा किया था और मैं तुम्हें बलवान बना दूंगा। यह लो, यह एक विशेष पास है जिसे दिखाकर तुम वहां जा सकते हो जहां से अंतरिक्ष-यान उडाये जाते हैं। मेरा अंतरिक्ष-यान लेकर चांद पर चले जाओ और वहां तुम्हें बल मिल जायेगा। अगर वहां तुम काफ़ी बलवान महसूस न करो तो तुम उड़कर सबसे पास की ग्रहिका पर चले जाना। लेकिन इसका पूरा ध्यान रखना कि अंतरिक्ष में कहीं खो न जाना। यह रहा नक़शा। इस पर रास्ता बना हुआ है। लेकिन इतना याद रखना चांद के दोनों ओर दो और चांद हैं। वे पृथ्वी की तरह बड़े हैं। हम उन्हें देख नहीं सकते क्योंकि वे धूल के बने हुए हैं। धूल के बने हुए चांद पर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

"क्या मतलब, कुछ भी नहीं कर सकते?" ग्रीश्का ने पूछा। "क्या आप डरते हैं कि आपके अंतरिक्ष-यान पर धूल जम जायेगी? वापस आकर मैं उसे साफ़ कर दूंगा।"

"नहीं, बात यह नहीं है," अंतरिक्षयात्री हंस पड़ा। "तुम उस तरह के चांद के आर-पार उड़ते हुए निकल जाओगे और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। इसलिए अपने रॉकेट का ईंधन बर्बाद न करना। अच्छा, तुम्हारी यात्रा सुखद रहे!"


СССР



ग्रीश्का धरती से उड़ चला

ग्रीश्का इतना ख़ुश था कि उसे विश्वास नहीं हो रहा था। वह भागा-भागा सीधा उस जगह पहुंचा जहां से अंतरिक्ष-यान उड़ते थे; उसे लगातार यह चिंता लगी हुई थी कि कहीं अंतरिक्षयात्री अपना इरादा बदल न दे, कहीं वह पास वापस न ले ले, और शायद वह उसे इतनी शरारत करने पर डांटे भी। लेकिन नहीं, रास्ते में उसे किसी ने नहीं रोका, और जहां से अंतरिक्ष-यान उड़ते थे वहां ज़मीन पर काम करनेवाले कर्मचारियों ने उससे मिलने पर उसके साथ सम्मान का व्यवहार किया। उन्होंने अंतरिक्ष की पोशाक पहनने और अंतरिक्ष-यान में बैठने में ग्रीश्का की मदद की, और, जैसा कि वहां का दस्तूर था, उसके ख़ुश-ख़ुश घर लौटने और अंतरिक्ष-यान के सुगमता से ज़मीन पर उतरने की कामना की।

इंजन चालू किया गया। पक्के सीमेंट-कंक्रीट के चबूतरे पर से रॉकेट तूफ़ानी वेग से चल पड़ा और पृथ्वी से ऊपर उठ गया। यान की गोल खिड़की में से ग्रीश्का को चीड़ के पेड़ों की फुनगियां और कौओं के घोंसले तेज़ी से गुज़रते हुए दिखायी दे रहे थे। "यह तो गयी पहली मंज़िल," ग्रीश्का ने अपने मन में यह बात अंकित कर ली।

आकाश की दूसरी मंज़िल पर पहुंचकर अंतरिक्ष-यान बतासियों के एक झुंड के पास से गुज़रा। बतासियां बहुत ऊंचा उड़ती हैं, लेकिन अंतरिक्ष-यान उनसे भी ऊंचा उड़ता है। थोड़ी ही देर बाद वे नीचे रह गयीं।

आकाश की तीसरी मंज़िल नीले बादलों से भरी हुई थी। चारों ओर बारिश हो रही थी। लेकिन ऐसा बहुत देर तक नहीं रहा। थोड़ी ही देर में रॉकेट बारिश से ऊपर उठ गया, और जल्दी ही गोल खिड़की के बाहर बर्फ़ के गाले मंडराते हुए गुज़रने लगे। अच्छी ख़ासी बर्फ़ की तूफ़ानी आंधी थी! तो यह बात है! बारिश बर्फ़ से शुरू होती है। बादलों के नीचे जमा देनेवाली सर्दी होती है। पृथ्वी की गर्म हवा में पहुंचने पर ही ये बर्फ़ के क्रिस्टल पिघलने लगते हैं और पानी की छोटी-छोटी बूंदें बन जाते हैं।

जब रॉकेट बादल के ठीक बीच में था उस वक़्त एक चमकदार नीली रोशनी अंतरिक्ष-यान की केबिन में भर गयी। यह कहीं पास ही चमकती हुई बिजली थी। लेकिन ग्रीश्का को बिजली की कड़क सुनायी नहीं दी – रॉकेट के इंजन बिजली की कड़क से भी गूंजदार आवाज़ से गरज रहे थे!

और फिर बादल भी उनके नीचे रह गया। वह पृथ्वी के ऊपर सफ़ेद नम्दे की पट्टी जैसा लटका हुआ था। वह देखने में उस खुले मैदान जैसा भी लग रहा था जिस पर जाड़े में चारों ओर से उड़-उड़कर बर्फ़ आकर जमा हो गयी हो। ग्रीश्का तो यहां तक सोचने लगा कि अभी एक-दो सेकंड में ही उस सफ़ेद टीले के पीछे से स्की पर फिसलनेवालों का झुंड निकलेगा। या शायद स्लेज में जुता हुआ कोई घोड़ा ...

लेकिन, ज़ाहिर है, ऐसा नहीं हो सकता था। लेकिन फिर, बादलों से ऊपर, आकाश की चौथी मंज़िल पर एक बड़ा-सा जेट विमान उड़ रहा था। ग्रीश्का ने उसकी ओर हाथ हिलाया। और फिर, चीड़ के पेड़ों, चिड़ियों और बादल की तरह ही, यह विमान भी नीचे रह गया।

और ऊपर सूरज अपने पूरे तेज से चमक रहा था। अब कोई चीज़ उसके चमकने में विघ्न नहीं डाल रही थी, कोई चीज़ उसके रास्ते में नहीं थी, क्योंकि यह बाहरी अंतरिक्ष की सीमा थी। बस सूरज के एक तरफ़ चांद का फीका-सा पीला घेरा दिखायी दे रहा था। ग्रीश्का का रॉकेट इसी घेरे के केंद्र की ओर जा रहा था।

अंतरिक्ष-यान उड़कर पृथ्वी से जितनी दूर होता जा रहा था, आकाश उतना ही अंधेरा होता जा रहा था। आख़िरकार, वह बिल्कुल काला हो गया, कालिख की तरह या जूते की पॉलिश की तरह। दूर के सितारे ऐसे चमक रहे थे जैसे वे पहले कभी नहीं चमके थे।

ग्रीश्का ने पीछे मुड़कर देखा। उसके पीछे पृथ्वी छोटी होते-होते एक हल्के नीले रंग के गेंद जैसी रह गयी थी। दूर, बहुत दूर पृथ्वी को देखकर ग्रीश्का उदास हो गया। और अगर उस क्षण उसके पास कोई और होता तो उसे ग्रीश्का को देखकर उस पर तरस आता।



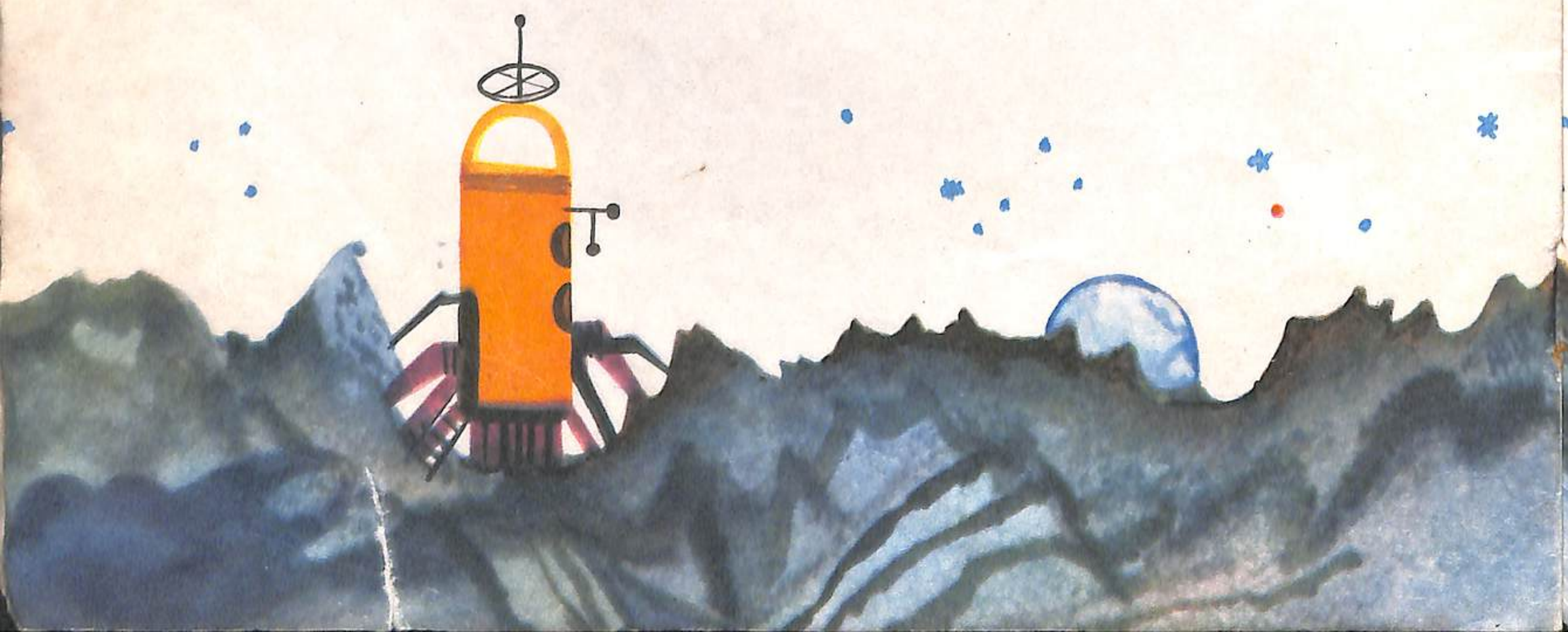


ग्रीश्का चांद पर उतरा

ग्रीश्का गोल खिड़की से नाक सटाकर नीचे चंद्रमा की ओर देखने लगा। वहां एक भी नदी या झील या जंगल नहीं था, कोई पेड़ तक नहीं था, बस सुरमई खाकी रंग के पथरीले मैदान थे और उन मैदानों पर पहाड़ थे। पृथ्वी पर तो पहाड़ पांतों में खड़े रहते हैं, लेकिन चांद पर उन्होंने गोल दायरे बना रखे थे, मानो वे सब कोई अच्छी कहानी सुनने के लिए घेरा बांधकर जमा हो गये हों।

चांद के पहाड़ों को देखकर ग्रीश्का को अपने अहाते की याद आ गयी: वहां भी लड़कियां घेरे बनाकर खड़ी होती थीं, अपस में कानाफूसी करती थीं और खी-खी करके हसती थीं और उसका मज़ाक उड़ाती थीं। अटारी में बैठ-बैठे ग्रीश्का ने उन्हें अच्छी तरह देखा था। "अच्छी बात है, अच्छी बात है," उसने सोचा। "मैं तुम सबको बताऊंगा। तुम लोग हंसती रहो – जब मेरी पकड़ में आओगी तब पता चलेगा..."

यह तो हम जानते ही हैं कि ग्रीश्का को बदला लेने की भयानक तरकीबें सोचने का बड़ा चाव था। लेकिन इस बार उसके पास कुछ भी सोचने का समय नहीं था: रॉकेट चांद पर उतर चुका



था और उसे बाहर निकलना था। चांद की धरती पर पांव रखते ही ग्रीश्का फिसल गया और पीठ के बल गिरा। लेकिन गिरने से उसे चोट तनिक भी नहीं लगी – ग्रीश्का ने देखा कि वह बहुत ही धीरे-धीरे गिरा था। एक बार पृथ्वी पर ग्रीश्का सड़क के किनारे की बर्फ़ से ढकी हुई पटरी पर फिसल रहा था और वह इतने ज़ोर से गिरा था कि उसे दिन में तारे दिखायी देने लगे थे। लेकिन चांद पर तनिक भी चोट नहीं लगी – बल्कि यह भी कहा जा सकता है कि कुछ अच्छा ही लगा।

ग्रीश्का उलटकर पेट के बल लेट गया और अपनी नाक के सामने जो कुछ था उसे ध्यान से देखने लगा। और उसने देखा कि चारों ओर चांद की धरती पर छोटे-छोटे कांच के दाने जैसे बिखरे हुए हैं। उसके जूतों के तलों के नीचे यही लुढ़क रहे थे और इन्हीं की वजह से चांद का धरातल फिसलना हो गया था।

"इन्हें यहां किसने फैलाया होगा?" ग्रीश्का सोचने लगा। "मुझे ज़्यादा सावधान रहना पड़ेगा।"

लेकिन थोड़ी ही देर में ग्रीश्का सावधान रहनेवाली बात भूल गया। उसे पता चल गया था कि यहां तो वह इतना ऊंचा और इतनी दूर तक कूद सकता था जितना पृथ्वी पर बड़े-से-बड़े चैम्पियन भी नहीं कूद सकते। वह बड़ी आसानी से चौड़े-चौड़े गढ़ों को फांदकर पार कर गया, छलांग लगाकर बड़ी-बड़ी चट्टानों के ऊपर पहुंच गया और – मुसीबत में फंस गया। एक बार छलांग लगाने के बाद वह एक दरार में जा गिरा। सौभाग्य से वह दरार बहुत गहरी नहीं थी, लेकिन दुर्भाग्य से वह एक संदूक़ जितने बड़े पत्थर से रगड़ खा गया था। पत्थर लुढ़ककर दरार के ऊपर आ गया, और ग्रीश्का दरार के अंदर था।





ग्रीश्का दरार में दबा-सिकुड़ा बैठा था। उसके दिमाग़ में बेहद उदासी-भरे विचार आ रहे थे। उसे अपने मां-बाप की याद आयी – उसने उन्हें यह तक नहीं बताया था कि वह कहां जा रहा है... और फिर उसके मन में यह बात भी आयी कि अब वह अंतरिक्षयात्री को उसका अंतरिक्ष-यान लौटा नहीं पायेगा...

ग्रीश्का बड़ी तकलीफ़ से बैठा हुआ था और उसकी टांगें सुन्न पड़ने लगी थीं। उसने उन्हें थोड़ा-सा सीधा करने की कोशिश की। उसे अपना जूता दरार की तली से और अपना टोप पत्थर से अड़ाकर धक्का देना पड़ा। यह तो कमाल ही हो गया! पत्थर धीरे-धीरे उठने लगा। फिर ग्रीश्का ने उसे अपने हाथों से ढकेला और वह एक ओर को लुढ़क गया। ग्रीश्का ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था! वह फिर आज़ाद हो गया था! और वह बलवान भी हो गया था! नहीं, अंतरिक्ष-यात्री ने उसे फुसलाया नहीं था। उसने अपना वादा पूरा किया था!

ग्रीश्का चांद के पत्थर को इधर-उधर लुढ़काने लगा। उसे लुढ़काना उतना ही आसान था जितना ख़ाली गोल पीपे को, और इसमें उसे थकन भी बिल्कुल नहीं हुई।

इतने में एक उल्का-पिंड – बाहरी अंतरिक्ष से नीचे गिरनेवाला पत्थर – ठीक ग्रीश्का की नाक के सामने चांद की धरती पर गिरा। वह इतने ज़ोर से गिरा था कि मिट्टी गरम हो गयी और क्षण भर में खौलने लगी, बिल्कुल पानी की तरह। उसमें से भाप की लहर भी उठने लगी।

यह देखकर ग्रीश्का डर गया, और वहीं रुक गया। अगर उल्का-पिंड उसकी अंतरिक्ष की पोशाक से टकरा गया होता तब तो सचमुच उसकी मुसीबत ही हो जाती। जब ग्रीश्का बुरी तरह डर जाने के बाद अपने आप को संभाल रहा था उसी समय कोई चीज़ आकर उसके टोप से टकरायी। उसकी आवाज़ कुछ-कुछ बारिश पड़ने जैसी थी और सचमुच वह थी भी वही – चांद की बारिश। ग्रीश्का ने चुल्लू बांधा और थोड़ी ही देर में उसके दोनों हाथ उन छोटे-छोटे कांच के दानों से भर गये – वही दाने जिन्होंने चांद के धरातल को ढक रखा था। "अच्छा, तो चांद के वे दाने यहां से आते हैं," ग्रीश्का ने अनुमान लगाया। पृथ्वी पर पानी भाप बनकर उड़ जाता है। बहुत ऊपर आकाश पर पहुंचकर, जहां बहुत ठंड होती है, पानी की भाप से बर्फ़ के क्रिस्टल बन जाते हैं, और ओले गिरते हैं। चांद पर पत्थर भाप बनकर उड़ता है, इसलिए जब वहां बारिश होती है तो बारिश की बूंदें छोटे-छोटे पत्थरों की शक्ल की होती है। पृथ्वी पर बादल बहुत विशाल होते हैं और कभी-कभी उनसे लगातार हफ़्ते-भर तक बारिश होती रहती है। लेकिन यहां चांद की बारिश कुछ सेकंड तक ही रही।

"अब मुझे चलना चाहिये," ग्रीश्का ने फ़ैसला किया। "कौन जाने, यह मुझे मार डाले। मैं बलवान तो हो गया हूं। मैं बस एक ग्रहिका पर जाकर थोड़ा और बलवान हो जाऊंगा और तब घर वापस लौटने का समय आ जायेगा..."

ग्रीश्का ग्रहिका पर

अंतरिक्ष-यान जब ग्रहिका के निकट पहुंचा तो ग्रीश्का चकित रह गया: कितना छोटा ग्रह था, बस कोई एक मील लंबा और आधा मील चौड़ा। और वह गोल भी नहीं था, बल्कि देखने में खीरे जैसा अधिक लगता था। लेकिन इससे भी अचरज की बात यह थी कि उस छोटे-से ग्रह पर एक रॉकेट खड़ा था। उसके अंदर कौन होगा? ग्रीश्का की समझ में नहीं आ रहा था कि ख़ुश हो या चिंतित। "देखना पड़ेगा," उसने फ़ैसला किया और अपना रॉकेट नीचे उतारकर पहलेवाले रॉकेट की बग़ल में ला खड़ा किया।

वह अंतरिक्ष-यान से बाहर निकला और सीढ़ी से नीचे उतरा; आगे बढ़ते हुए वह लगातार इधर-उधर देखता जा रहा था। दूसरे रॉकेट की बग़ल में कोई अपने हाथों में रस्सी का एक लच्छा लिये अंतरिक्ष की पोशाक पहने खड़ा था। "यह आदमी रस्सी क्यों लिये हुए है?" ग्रीश्का ने चिंतित होकर सोचा। "यहां की कोई बात है जो मुझे अच्छी नहीं लग रही है।"

ग्रीश्का सीढ़ी के आखिरी ज़ीने पर से नीचे कूदा। जैसे ही उसके पांवों ने ग्रहिका को छुआ वैसे ही वह उछल पड़ा और इस तरह उड़ने लगा मानो उसमें हवा भरी हो। उसी समय अजनबी ने अपनी बांह घुमायी, ग्रीश्का की टांग रस्सी में फंसायी और फंदा कस दिया। उधर ग्रीश्का अभी ग्रहिका के ऊपर अंतरिक्ष में लटका हुआ ही था कि इधर अजनबी ने रस्सी का दूसरा सिरा ग्रीश्का के रॉकेट से बांध दिया और उसे नीचे खींच लाया। आख़िरकार ग्रहिका पर खड़े होकर ग्रीश्का ने अजनबी के टोप में छिपे हुए चेहरे को देखा और उसे कोई और भी नहीं वान्या दिखायी दिया।

ग्रीश्का हर बात के लिए तैयार था लेकिन इसके लिए नहीं! यही क्या कम बुरा था कि पृथ्वी पर इस नेक वान्या ने उसकी नाक में दम कर रखा था – और अब वह उड़कर यहां भी आ गया था! और फिर उसने उसे फंदे में जकड़ भी लिया था! नहीं, ग्रीश्का इतना नहीं बर्दाश्त कर सकता था। वह चलकर वान्या के पास गया और उसके सीने पर एक घूंसा मारा। और उसी क्षण वान्या और ग्रीश्का रबड़ की गेंदों की तरह उछलकर एक-दूसरे से दूर जा पड़े, और क़लाबाज़ी खाकर तैरते हुए ऊपर चले गये। वान्या भी अपने रॉकेट के साथ रस्सी से बंधा हुआ था। इसलिये



दोनों लड़के अपनी-अपनी रस्सियों के सिरे पर गुब्बारों की तरह लुढ़क रहे थे।

"तुम भी अजीब बुद्धू हो," ग्रीश्का को अपने कान के आले में वान्या की आवाज़ सुनायी दी। "मुझे अंतरिक्षयात्री ने यहां भेजा था। वह तुम्हें यह बताना भूल गया था कि तुम ग्रहिका पर उतरने से पहले अपने आपको रॉकेट के साथ ज़रूर बांध लेना। जिस समय तुम चांद पर थे मैं सीधा उड़कर यहां आ गया। अगर मैंने रस्सी का फंदा डालकर तुम्हें जकड़ न लिया होता तो तुम भी उल्का-पिंड की तरह बाहरी अंतरिक्ष में तैर रहे होते। पृथ्वी पर तुम्हें सहज ढंग से चलने की आदत है – पृथ्वी बड़ी है और वह ज़ोर से हर चीज़ को अपनी ओर खींचती रहती है। लेकिन यह ग्रहिका इतनी छोटी है कि वह मुश्किल से ही चीज़ों को उनकी जगह पर टिकाये रख सकती है।

"यहां किसी भी चीज़ में लगभग कोई वज़न नहीं होता। समझे? ! तुम्हें चांद पर ही इस बात को समझ लेना चाहिये था। अब मुझे देखो, और जैसा मैं करूं वैसा ही करो..."

वान्या अपने हाथों से रस्सी को लपेटने लगा। वह ग्रहिका पर उतर आया और उसने पत्थरों के बीच एक छोटी-सी दरार खोजकर उसमें अपना पांव फंसा लिया ताकि फिर हवा में न उड़ जाये।

ग्रीश्का अभी तक ग्रहिका के ऊपर तैर रहा था। जीवन में पहली बार वह अपने आपसे लज्जित था। यह आदमी उसकी जान बचाने के लिए भागा-भागा आया था और वह, ग्रीश्का, इसी की पिटाई करना चाहता था। सचमुच, बहुत बुरी बात थी, थी न?

इसलिए ग्रीश्का उस छोटे-से नन्हे-से ग्रह के ऊपर क़लाबाज़ियां खाते हुए अपने आपको धिक्कारता रहा। उसके चारों ओर ब्रह्मांड का गहरा काला अंतरिक्ष था, जिसमें करोड़ों-अरबों सफ़ेद तारे छिटके हुए थे। इसी काली पृष्ठभूमि पर सूरज का गोला अपने पूरे तेज से दहक रहा था, और चपटा-सा गोल चांद अपनी पीली आभा से चमक रहा था, और पृथ्वी की गोल थाली नीली ज्योति से चमक रही थी।

"अरे, क्या सो गये तुम?" ग्रीश्का को एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनायी दी। "नीचे उतरो। आओ, वॉलीबाल खेलेंगे।"

ग्रीश्का अपने आपको ग्रहिका के धरातल पर उतार लाया; उसने भी अपने पांव के लिए एक दरार खोज ली और खेलने के लिए तैयार हो गया। अलबत्ता, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यहां कोई वॉलीबाल कैसे खेल सकता है। और फिर, कोई गेंद भी तो नहीं था।

इतने में वान्या रेंगकर एक बहुत बड़े, अल्मारी जितने बड़े पत्थर के नीचे पहुंच गया और उसने उसे धक्का दिया। बहुत धीरे-धीरे लुढ़कता-पुढ़कता वह पत्थर तैरता हुआ ग्रीश्का की ओर आया, मानो उसका ऐसा करने को जी न चाह रहा हो।

"पृथ्वी पर जिस चीज़ का वज़न दस टन होता है वह यहां बस एक किलोग्राम वज़न की ही होती है, इसलिए डरो नहीं," वान्या ने रेडियो पर चिल्लाकर कहा।

ग्रीश्का ने अपने हाथ की उंगलियां चौड़ी फैलाकर बड़ी बहादुरी से पत्थर को ठेला और उसे वान्या की ओर वापस भेज दिया। सचमुच, यह दृश्य देखते ही बनता था।

इसके बाद वान्या ने फ़ुटबाल के खिलाड़ी की तरह पत्थर को ठोकर मारी। वह लुढ़कता-पुढ़कता बाहरी अंतरिक्ष में निकल गया और उसने एक ऐसी यात्रा शुरू की जो उसे सूरज, पृथ्वी,



चांद और छोटी-छोटी ग्रहिकाओं से भी परे ले जा सकती थी। वह एक उल्का-पिंड बन गया। हो सकता है कि किसी दिन वह पृथ्वी के रास्ते को काटता हुआ गुज़रे। अगर रात के समय ऐसा हुआ तो लोगों को आकाश पर आग की एक लकीर-सी दिखायी देगी – उस पत्थर के मार्ग की लकीर जो दहक़कर सफ़ेद हो जायेगा और वायुमंडल में जल जायेगा।

लड़कों को उल्का-पिंड बनाने में बहुत मज़ा आया। वे एक के बाद एक पत्थर फेंकने लगे और अंत में उन्होंने मिलकर बस जितना बड़ा एक पत्थर बाहरी अंतरिक्ष में ढकेल दिया।

घर को वापसी

ारों की तरह लुढ़क रहे थे।
पने कान के आले में वान्या की आवाज़ सुनायी
तुम्हें यह बताना भल

दोनों रॉकेट एक ही समय ग्रहिका से चलकर पृथ्वी की ओर बढ़े। वे साथ-साथ उड़ रहे थे ; न कोई किसी से आगे निकलता था और न दूसरे को पीछे छोड़ता था ; बिल्कुल वैसे ही जैसे पृथ्वी पर कोई दो दोस्त शहर की सड़क पर या किसी घास के मैदान में बनी पगडंडी पर साथ-साथ टहल रहे हों।

जब रॉकेट आधी दूर पहुंच गये तो अंतरिक्षयात्री ने रेडियो पर उनसे संपर्क स्थापित किया। उसने उनसे पूरा हाल सुना कि उनकी उड़ान कैसी रही, चांद पर और ग्रहिका पर वे कैसे उतरे, और फिर उसने लड़कों से पूछा कि उन्हें कोई सवाल तो नहीं करना है। ग्रीश्का को एक सवाल पूछना था :

"क्या पृथ्वी पर भी मैं उतना ही बलवान रहूंगा जितना मैं ग्रहिका पर था ?" वह यही जानना चाहता था।

"नहीं," अंतरिक्षयात्री ने जवाब दिया, "पृथ्वी पर तुम उतने ही बलवान रहोगे जितने पहले थे। सहज ढंग से जीवन बिताने के लिए तुम्हें और ज़्यादा बलवान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब तुम स्वयं जान गये हो कि अगर तुम्हारे अंदर ज़रूरत से ज़्यादा ताक़त आ जाये तो तुम बहुत नुक़सान और चोट पहुंचा सकते हो। तुम और वान्या मिलकर पूरी ग्रहिका को छोटे-छोटे उल्का-पिंडों में तोड़ सकते थे। तुम लोग एक पूरे ग्रह को नष्ट कर सकते थे, अगर वह भी छोटा-सा होता और उस पर कोई लोग न रहते होते।"

"धन्यवाद !" ग्रीश्का ने अंतरिक्षयात्री से कहा। और पृथ्वी पर वापस पहुंचने पर ग्रीश्का पहले से ज़्यादा बलवान तो नहीं था, लेकिन अब वह पहले से बहुत ज़्यादा समझदार हो गया था।

उसने
ओर आ
"पृ
ही होती है
ग्रीश्क
वान्या की अ
इसके
पुढ़कता बाह

